# उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्यों में निहित यौगिक क्रियाएँ:एक विवेचनात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),

दयालबाग़, आगरा से संगीत विषय में पी–एच०डी०

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध कार्य की

**रूपरेखा**

**2018**


**शोध निर्देशिका**
प्रो० नीलू शर्मा
संगीत विभाग

**शोधकर्त्री**
श्वेता कुमारी

**विभागाध्यक्ष**

प्रो० सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत विभाग

**संकाय प्रमुख**

प्रो० जे०के० वर्मा
कला संकाय

**कला संकाय (संगीत विभाग),**

**दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग़, आगरा 282005**

## भूमिका :–

संगीत ईश्वर की नादात्मक अभिव्यक्ति है। इसे मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने का माध्यम मानते हुए जीवन लक्ष्य को प्रतिपादित करने की विद्या भी कहा गया है, यही कारण है कि हमारे प्राचीन विद्वानों ऋषियों एवं आचार्यों ने संगीत रूपी विद्या को अनमोल बताया है। साथ ही साथ इसका विकास भी किया है।

**'सम्यक प्रकारेण यद् गीयते तत्संगीतम्'**

सम्यक प्रकार से अर्थात् स्वर, ताल, शुद्ध आचरण, हाव–भाव और शुद्ध मुद्रा आदि सहित गाया जाये, वही **संगीत** कहलाता है। संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन एवं नृत्य तीनों विधाओं का अपना मूल अस्तित्व एवं योगदान है। गीत, वाद्य तथा नृत्य इन तीनों का आधार स्वर तथा लय है। स्वर तथा लय नाद के परिष्कृत रूप है। मधुर और कर्ण–प्रिय अर्थात् सांगीतिक ध्वनि के लिए **नाद** संज्ञा है।

नाद ब्रह्म है व नाद वह है, जो आनंद देता है। नाद से बड़ा न कोइ मंत्र है, न ही देव। नाद सम्पूर्ण लोक के कण–कण में विद्यमान है, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव। नाद का प्रभाव सभी जीव–जंतुओं पर देखने को मिलता है। प्राचीन भारतीय प्रबुद्ध ऋषि एवं मनीषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति ही नाद ब्रह्म से मानी थी। संगीतशास्त्र संदर्भित मतंगमुनि कृत ग्रंथ बृहद्देशी में नाद का महत्व बताते हुए नाद में ही सभी संसारिक तत्त्वों को बताया है –

**न नादेन बिना गीतं न नादेन बिना स्वरः ।**
**न नादेन बिना नृत्यं तस्मान्नादात्मकं जगत् ।।**

भारतीय दर्शन के अनुसार, नाद की शक्ति मनुष्य की चेतना एवं उसकी प्रवृत्तियों को प्रेरित करती है। मनुष्य की वह प्रवृत्तियॉ उसके प्राण वहन को धारामयी बनाने में सहयोगी है।

अतः नाद एवं प्राण वहन का परस्पर सम्बंध है एवं प्राण का मन तथा चित्त के साथ अर्थात् इससे स्पष्ट है कि नाद का चित्त से भी संबंध है।मानव चित्त की जो प्रवृत्ति होती हैं, ठीक उसी प्रकार मानव की कार्य अवस्था होती है। इन चित्तवृत्ति का निरोध नाद के माध्यम से या नाद

साधना द्वारा सम्भव है। नाद ब्रह्म की उपासना तथा निरंतर साधना से योग रूपी क्रिया जीवंत होती है।

योग चित्तवृतियों का निरोध करने में सहायक है अर्थात् समस्त चित्तवृतियों के निरोध को **योग** कहते है। योग आध्यात्मिक अनुशासन एवं अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित ज्ञान है जो मन और शरीर के मध्य सामंजस्य का कार्य करता है। योग और संगीत, भारत में वेदकाल से प्रचलित हैं। योग प्राचीन भारतीय परम्परा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योग अभ्यास शरीर एवं मन, विचार एवं कर्म, आत्म संयम एवं पूर्णता की एकात्मकता तथा मानव एवं प्रकृति के मध्य सामन्जस्यता प्रदान करता है तथा यह स्वास्थ्य एवं कल्याण का पूर्णतावादी दृष्टिकोण है। भारतीय संगीत में लय को तीनों ही विधाओं में महत्वपूर्ण माना है, जिसे काय़म रखने हेतु ताल का प्रचलन रहा एवं ताल को प्रदर्शित करने का माध्यम वाद्य आदि माने गये है। वर्तमान में भारतीय संगीत की तीन विधाओं (गायन, वादन एवं नृत्य) में 'वादन' विधा के अंतर्गत अवनद्ध वाद्यों का स्थान ताल प्रदर्शन हेतु महत्त्वपूर्ण है।

भरतमुनि कृत **नाट्यशास्त्र**ग्रन्थ में वाद्यों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया है–

**तत् (वितत्), घन, सुषिर एवं अवनद्ध वाद्य।**

ताल देने में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाले वाद्यों में अवनद्ध वाद्य प्रमुख है। अवनद्ध और आनद्ध इन दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति के मूल में 'नद्ध' शब्द है, जो कि संस्कृत भाषा के नह धातु से 'क्त' प्रत्यय लगाकर बना है। नह का अर्थ– बाँधना, लपेटना, ढँकना, पहनना या धारण करना है। अतः नद्ध शब्द का अर्थ चारों ओर से बँधा, ढँका, मढा, लपेटा या पहनाया हुआ होता है। इसी 'नद' शब्द के पहले विस्तार या फैलाव के अर्थ वाले 'अव' उपसर्ग के योग से 'अवनद्ध' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।

भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है, विशेषकर शास्त्रीय संगीत में।उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले अवनद्ध वाद्यों क्रमशः पखावज एवं तबला का स्थान अन्य अवनद्ध वाद्यों में विशिष्ट है।

जब ध्रुपद–धमार गायकी का वर्चस्व था तब इन गायन शैलियों के साथ संगत हेतु पखावज वाद्य का ही प्रचलन था। शनैः शनैः समय परिवर्तन एवं लोगों की रूचि के अनुसार नवीन गायन शैलियों (ख्याल, ठुमरी, दादरा आदि) का आर्विभाव हुआ तथा इसके संगत हेतु एक कोमल व मुलायम ध्वनि या नाद युक्त अवनद्ध वाद्य आवश्यकतानुसार लाया गया, जिसके फलस्वरूप तबला वाद्य का विकास हुआ।

भारतीय संगीत में वाद्यों की अपनी एक बहुत बड़ी परम्परा रही है। इस परम्परा में हमें लोक तथा शास्त्रीय दोनों तरह के वाद्यों की सुदृढ़ परम्परा के दर्शन होते हैं। इसमें पखावज एवं तबला दोनों ही उत्तर भारतीय संगीत और विशेषकर शास्त्रीय संगीत के सर्वाधिक प्रमुख अवनद्ध वाद्य हैं। यह दोनों ही वाद्य संगीत के इतिहास के उत्तर मध्य युग की देन हैं।

पखावज की बनावट तथा वादन शैली, ध्रुपद–धमार आदि गंभीर्य एवं रसोत्पत्ति युक्त गीतों में संगत के उपयोगानुसार तथा तबले की बनावट तथा वादन शैली, ख्याल, टप्पा, ग़ज़ल, ठुमरी आदि श्रृंगार युक्त गीतों में संगत के उपयोग अनुसार ही रही है। अतः इन दोनों वाद्यों का अपना–अपना महत्व है।

पखावज शब्द **'पख'** एवं **'आवाज़'** से मिलकर बना। पख का अर्थ–**बाजु (पक्ष)** से है तथा आवाज़ से तात्पर्य **ध्वनि** से है अर्थात् बाजुओं द्वारा उत्पन्न ध्वनि।

तबला शब्द **'तब्ल'** से आया मानते है। जिसका अर्थ–**चिकना** या **समतल** होता है। अर्थात् पखावज आंकिक तथा तबला उद्धर्वक एवं आलिंग्य का भाग है।

अवनद्ध वाद्यों (पखावज एवं तबला) में नाद की गुणवत्ता, बोलों की वास्तविकता, विभिन्न रसों के प्रदर्शन की क्षमता, स्वभाविकता एवं मौलिकता आदि अनेक गुण विद्यमान है।

अवनद्ध वाद्यों (पखावज एवं तबला) के वादन में नियन्त्रित एवं संतुलित ध्वनि–निष्पादन द्वारा सौंदर्य की उत्पत्ति होती है। ध्वनि निष्पादन हेतु वादक की बैठक, हाथ एवं उंगलियों का रख–रखाव साथ ही उनका संचाल, बोलों का उचित निकास आवश्यक होता है। इन सभी तत्त्वों के संयोग से ही कलाकार (वादक) मन एवं मस्तिष्क  को एकाग्र रूप में साधना के लिए परिपक्व कर पाता है।

अवनद्ध वाद्यों का वादन नाद की साधना हेतु अत्यन्त प्रभावी तथ्य है, जिस आधार पर कहा जा सकता है कि इनके वादन में योग निहित हैं। कहने में अतिशोक्ति न होगी कि योग इसका आधार है। अतः जहाँ आधार है वहाँ भवन का होना सम्भव है अर्थात् योग से सम्बंधित यौगिक क्रियाओं का दोनों ही वाद्यों के वादन में होना स्वभाविक प्रतीत होता है।

वर्तमान में शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्यों साथ ही इनमें (अवनद्ध वाद्यों) योग की भूमिका की उपयोगिता एवं महत्व को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्री ने इससे सम्बंधित कई लेख–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जिसमें 'योग','व्यायाम' एवं 'चिकित्सा' आदि विषय परिलक्षित हुए। जिस कारण शोधकर्त्री की जिज्ञासा अवनद्ध वाद्यों में निहित यौगिक क्रियाओं के सम्बंध में प्रस्फुटित हुयी। इसी जिज्ञासा की तृप्ति हेतु शोधकर्त्री ने साहित्य का सर्वेक्षण किया। इस संदर्भ में शोधकर्त्री ने शोध–प्रबंध, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, जनरल, अंतरजाल आदि के द्वारा सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया जो कि निम्नवत हैं–

## सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

### पुस्तकें:–

**1.**गोस्वामी योगचार्य डॉ० सुरक्षित, पातंजल योग एवं नाथयोग, प्रकाशन–सत्यम् पब्लिशिंग हाउस नई–दिल्ली 110059, संस्करण–2005

**2.**वर्मा डॉ० सतीश, संगीत चिकित्सा–एक शास्त्रीय अध्ययन, प्रकाशन– राधा पब्लिकेशंस, नई–दिल्ली 110002, संस्करण–प्रथम 2004

**5.** ब्रह्मचारी डॉ० धीरेन्द्र, योगासन विज्ञान, संस्करण–प्रथम 2002

**6.** शर्माडॉ० महेन्द्र प्रसाद बमबम, अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा

### पत्र–पत्रिकाएँ–

**1**. सैनी डॉ० प्रवीण, लेख–नाट्य संगीत द्वारा योग साधना, संगीत कला विहार, मार्च–2011

**2.**गोखले श्रीमती मंजिरी विकास, योगसाधना – संगीत साधकों के लिए,संगीत कला विहार, 1996

**3.** शर्मा डॉ० नीलू, लेख–तबला वादन में बैठक– एक विवेचन, संगीत कला विहार, अक्टूबर–2010

**4.**गोखले श्रीमती मंजिरी विकास, लेख–योग और संगीत एक सुसंगति, संगीत, जून–2008

**5.**सक्सेना श्रीमान रमेश कुमार, लेख–योग साधना का संगीत से सम्बन्ध, संगीत, जून–1996

**6.**लोनावाला योग इन्स्टीट्यूट, लेख–योगाभ्यास में ओंकारोच्चाण का महत्व, संगीत कला विहार, अक्टूबर–2010

**7.**यादव शेफाली, लेख–संगीत एक व्यायाम भी, संगीत, जुलाई–1998

**शोधप्रबंधः–**

**1.**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा, ''तबला वादन की शिक्षण पद्धति– एक विवेचनात्मक अध्ययन'', वर्ष–1996

**2.** संगीत और योग का विश्लेषणात्मक अध्ययन'', वर्ष–2011

**3.**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा, ''योग प्रधान उपनिषद् साहित्यः एक समीक्षात्मक अध्ययन'', वर्ष–2010

**4.** रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, ''आयुर्वेद में संगीत की भूमिका : एक अध्ययन'', वर्ष–2010

**5.** कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, संगीत–साधना एवं योग–साधना : एक समन्वयात्मक अध्ययन, वर्ष–2012

**लघुशोधप्रबंधः–**

**1.** दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा, ''मानवीय स्वास्थ्य में वाद्य यंत्रों की भूमिका'', वर्ष–2006

उपरोक्त सर्वेक्षण से प्राप्त विवरणों से जो तथ्य दृष्टिगत होते है, वह इस प्रकार है–

- उपरोक्त पुस्तकों में अवनद्ध वाद्यों के परिचय एवं बनावट से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है एवं योग के विषय में विवेचन भी प्राप्त होता है, परन्तु अवनद्ध वाद्यों में यौगिक क्रियाओं के संदर्भ में विवेचन नहीं मिलता है।
- पत्रिकाओं में संगीत एवं योग का सम्बन्ध, संगति, सामजस्य आदि से संबन्धित लेख प्रकाशित है, परन्तु अवनद्ध वाद्य एवं योग का पूर्णरूपेण स्पष्टीकरण प्राप्त नहीं होता है।

- शोधप्रबंधों पर दृष्टिपात करें तो प्राप्त होता है कि शास्त्रीय संगीत एवं योग को प्रधानता देते हुए अध्ययन प्रस्तुत किये गये हैं, परन्तु शास्त्रीय संगीत की विधा वादन में योग अथवा यौगिक क्रियाओं के संदर्भ में कोई कार्य प्रकाश में नहीं आया है।

अतः उपयुक्त सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उपयुक्त दी गयी जानकारी में शास्त्रीय संगीत में योग से सम्बंधित कार्य हुये हैं परंतु जिस दृष्टिकोण से शोधकर्त्री अपना शोध कार्य करना चाहती है, उस विषय पर शोधकर्त्री के संज्ञान में अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। अस्तु शोधकर्त्री ने अवनद्ध वाद्यों में निहित क्रियाओं का  गहन अध्ययन करने हेतु उक्त विषय का चयन किया है।

## विषय कथन

**''उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्यों में निहित यौगिक क्रियाएँ : एक विवेचनात्मक अध्ययन''**

### विषय कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

- **शास्त्रीय**

**1**. वि. (सं.) शास्त्र–सम्मत, शास्त्रानुमोदित, शास्त्र–संबंधी ; वैज्ञानिक।

मानक विशाल हिन्दी कोष–कृष्ण कान्त दीक्षित एम. ए. एल. टी. (राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त) कमल प्रकाशन प्रथम संस्करण–2005, पृष्ठ सं.–969

**2**. तकनीक, विज्ञान संगत, विज्ञानीय, शास्त्र संगत।

समांतर कोश हिंदी थिसारस – अरविन्द कुमार कुसुम कुमार, पृष्ठ सं.–1599

**3.** (वि.) शास्त्र–संबंधी।

हिन्दी शब्द कोश– डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, कश्मीर गेट, दिल्ली–110006, संस्करण–2010, पृष्ठ सं.–384

- **अवनद्धवाद्य**

**1.**वि. (सं.)बंधा हुआ और ढका हुआ। पु. ढोल, मृदंग। (संगीत के संदर्भ में चर्म से ढके हुए और डोरी या बद्धी से बंधे हुए वाद्य, अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं।)

मानक विशाल हिन्दी कोष–कृष्ण कान्त दीक्षित एम. ए. एल. टी. (राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त) कमल प्रकाशन प्रथम संस्करण–2005, पृष्ठ सं.–101

**2.** आनद्ध वाद्य व अवनद्ध वाद्य (संगीत में वे वाद्य जो अंदर से खोखले एवं चर्म से मढ़े होते है, अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं।)

समांतर कोश हिंदी थिसारस – अरविन्द कुमार कुसुम कुमार, पृष्ठ सं.–694

- **निहित**

**1.**आंतरिक ; आधारित, स्थित।

समांतर कोश हिंदी थिसारस – अरविन्द कुमार कुसुम कुमार, पृष्ठ सं.–1172

**2.** वि. (सं.) अंदर छिपा हुआ, धरा हुआ, स्थापित ; सौंपा हुआ ; गम्भीर स्वर में उच्चरित।

मानक विशाल हिन्दी कोष– कृष्ण कान्त दीक्षित एम. ए. एल. टी. (राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त) कमल प्रकाशन प्रथम संस्करण–2005, पृष्ठ सं.–515

**3.** वि. अंदर छिपा हुआ।

हिन्दी शब्द कोश– डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, कश्मीर गेट, दिल्ली–110006, संस्करण–2010, पृष्ठ सं.–244

**4.**वि. (सं.) स्थापित, रखा हुआ।

भाषा शब्द कोश – गिरिजादत शुक्ल गिरीश, रामनारायणा लाल, बेनी प्रसाद, पंचम संस्करण

- **यौगिक**

**1.** वि.(सं.) मिला हुआ। पु. 28 मात्राओं वाले छंद : शब्दों के तीन भेदों में से एक (व्या.) शब्द। पु. अर्थों का वाचक शब्द ।

मानक विशाल हिन्दी कोष– कृष्ण कान्त दीक्षितएम. ए. एल. टी. (राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त) कमल प्रकाशन प्रथम संस्करण–2005, पृष्ठ सं.–795

**2.**वि.(सं.) योग संबंधी, योग का, किसी के साथ मिलना, लगा या सटा हुआ। पु.1 प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द 2. दो शब्दों के मेल से बना शब्द–योगक्षम।

प्रामाणिक शब्द कोष– आचार्य रामचंद्र वर्मा, लोक भारतीय प्रकाशन, तृतीय संस्करण–1996 पृष्ठ सं.–693

**3.** 1(वि.) मिला हुआ, योग से संबंधित,2(पु.) दो शब्दों के मेल से बना पद।

हिन्दी शब्द कोश– डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, कश्मीर गेट, दिल्ली–110006, संस्करण–2010, पृष्ठ सं.–348

- **विवेचनात्मक**

**1.** वि.(सं.) विवेचन संबंधी।

मानक विशाल हिन्दी कोष– कृष्ण कान्त दीक्षित एम. ए. एल. टी. (राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त) कमल प्रकाशन प्रथम संस्करण–2005, पृष्ठ सं.–910

**2**. कला समीक्षा।

समांतर कोश हिंदी थिसारस – अरविन्द कुमार कुसुम कुमार, पृष्ठ सं.– 1555

**3.**विचार, ज्ञान।

डॉ0 नारायणदत्त, पालीवाल कुमाउँनी हिन्दी शब्द कोश, पृष्ठ सं.–142

## शोध के उद्देश्य

- योग का परिचय एवं उसके विकास का अध्ययन करना।
- योग एवं संगीत के परस्पर संबंध का अध्ययन करना।
- उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन करना।
- पखावज वादन में निहित यौगिक क्रियाओं का अध्ययन करना।

- तबला वादन में निहित यौगिक क्रियाओं का अध्ययन करना।

## परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध प्रबंध की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य पखावज एवं तबला वाद्य में निहित यौगिक क्रियाओं के अध्ययन तक सीमित रहेगा।

## अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध में निरीक्षण विधि, वर्णनात्मक विधि, विवेचनात्मक विधि, साक्षात्कार विधि एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया जायेगा।

## अध्ययन के स्त्रोत

प्रस्तुत शोध–प्रबंध कार्य पुस्तकालय, विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, अंतरजाल, साक्षात्कार आदि की सहायता से पूर्ण किया जायेगा।

## अध्ययन के सोपान

- **भूमिका**
- **प्रथम अध्याय –योग : परिचय एवं विकास**
- **द्वितीय अध्याय – भारतीय संगीत और योग**
- **तृतीय अध्याय–उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य**
- **चतुर्थ अध्याय– पखावज वादन में निहित यौगिक क्रियाएँ**
- **पंचम अध्याय–तबला वादन में निहित यौगिक क्रियाएँ**
- **उपसंहार।**

वर्तमान समय में चहु दिशाओं में योग अत्यन्त प्रभावी है। योग के माध्यम से मानव अपनी जीवन शैली को क्रमबद्धता प्रदान करता है, परन्तु यह क्रिया मानव के कठिन एवं व्यस्त जीवन शैली के समक्ष ढील देदेती है। अतः मानव के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर यदि हम योग की प्रक्रिया को रचनात्मक अथवा सृजनात्मक रूप में प्रस्तुत करें तो यह मानव को अनेक लाभ प्रदान कर सकती है। जिसे रचनात्मकता प्रदान कराने हेतु शोधकर्त्री ने तबला एवं योग के संबंध को

चयनित किया है। जो लाभ योग द्वारा प्राप्त किया जाता है, वही अवनद्ध वाद्यों के वादन की क्रियाओं द्वारा भी किया जा सकता है।

अवनद्ध वाद्यों में निहित यौगिक क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में सृजनशीलता, एकाग्रता, बौद्धिक विकास, शारीरिक विकास, तत्परता इत्यादि गुण उत्पन्न किये जा सकते है। जो कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ स्वस्थ जीवन देने में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। जिससे अवनद्ध वाद्यों के वादन का महत्व सर्वविदित होगा।

## संदर्भ सूची


**1.** मठकर डॉ० दीप्ती, सुलभ तबला वादन शास्त्र (भाग–1), मठकर डॉ० दीप्ती, प्रकाशन– राजामण्ड़ी, आगरा–2, संस्करण– तृतीय, पृष्ठ सं.–21–24

**2.**गोस्वामी योगचार्य डॉ० सुरक्षित, पातंजल योग एवं नाथयोग, प्रकाशन–सत्यम् पब्लिशिंग हाउस नई–दिल्ली 110059, संस्करण–2005 पृष्ठ सं.–185–189

**3.** वर्मा डॉ० सतीश, संगीत चिकित्सा–एक शास्त्रीय अध्ययन, प्रकाशन– राधा पब्लिकेशंस, नई–दिल्ली 110002, संस्करण–प्रथम 2004, पृष्ठ सं.–150–152

**4.** ब्रह्मचारी डॉ० धीरेन्द्र, योगासन विज्ञान, संस्करण–प्रथम 2002, पृष्ठ सं.–25–80

**5.** शर्मा डॉ० महेन्द्र प्रसाद बमबम, अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा, पृष्ठ सं.–14

**6**. सैनी डॉ० प्रवीण, लेख–नाट्य संगीत द्वारा योग साधना, संगीत कला विहार, मार्च–2011पृष्ठ सं.–31

**7.**गोखले श्रीमती मंजिरी विकास, योगसाधना – संगीत साधकों के लिए,संगीत कला विहार, 1996पृष्ठ सं.–09–12

**8.** शर्मा डॉ० नीलू, लेख–तबला वादन में बैठक– एक विवेचन, संगीत कला विहार, अक्टूबर–2010पृष्ठ सं.–30

**9.**गोखले श्रीमती मंजिरी विकास, लेख–योग और संगीत एक सुसंगति, संगीत, जून–2008

**10.**सक्सेना श्रीमान रमेश कुमार, लेख–योग साधना का संगीत से सम्बन्ध, संगीत, जून–1996

# संदर्भ ग्रन्थ सूची


## पुस्तकें:–

**1.** मठकर डॉ० दीप्ती, सुलभ तबला वादन शास्त्र (भाग–1), मठकर डॉ० दीप्ती, प्रकाशन–राजामण्ड़ी, आगरा–2, संस्करण– तृतीय

**2.**गोस्वामी योगचार्य डॉ० सुरक्षित, पातंजल योग एवं नाथयोग, प्रकाशन–सत्यम् पब्लिशिंग हाउस नई–दिल्ली 110059, संस्करण–2005

**3.**वर्मा डॉ० सतीश, संगीत चिकित्सा–एक शास्त्रीय अध्ययन, प्रकाशन– राधा पब्लिकेशंस, नई–दिल्ली 110002, संस्करण–प्रथम 2004

**4.** ब्रह्मचारी डॉ० धीरेन्द्र, योगासन विज्ञान, संस्करण–प्रथम 2002

**5.** शर्माडॉ० महेन्द्र प्रसाद बमबम, अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा

## पत्रिकाएँ–

1. सैनी डॉ० प्रवीण, लेख–नाट्य संगीत द्वारा योग साधना, संगीत कला विहार, मार्च–2011

**2.**गोखले श्रीमती मंजिरी विकास, योगसाधना – संगीत साधकों के लिए,संगीत कला विहार, 1996

**3.** शर्मा डॉ० नीलू, लेख–तबला वादन में बैठक– एक विवेचन, संगीत कला विहार, अक्टूबर–2010

**4.**गोखले श्रीमती मंजिरी विकास, लेख–योग और संगीत एक सुसंगति, संगीत, जून–2008

**5.**सक्सेना श्रीमान रमेश कुमार, लेख–योग साधना का संगीत से सम्बन्ध, संगीत, जून–1996

**6.**लोनावाला योग इन्स्टीट्यूट, लेख–योगाभ्यास में ओंकारोच्चाण का महत्व, संगीत कला विहार, अक्टूबर–2010

## शोधप्रबंध:–

**1.**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा, ''तबला वादन की शिक्षण पद्धति– एक विवेचनात्मक अध्ययन'', वर्ष–1996

**2.** संगीत और योग का विश्लेषणात्मक अध्ययन'', वर्ष–2011

**3.**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा, ''योग प्रधान उपनिषद् साहित्यः एक समीक्षात्मक अध्ययन'', वर्ष–2010

## लघुशोध–प्रबंधः–

**1.** दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा, ''मानवीय स्वास्थ्य में वाद्य यंत्रों की भूमिका'', वर्ष–2006